Course No.- 7B
Course Credit - 02

PSS – 02
METHODS OF TEACHING HINDI - II
TEACHING AIDS: MEANING & IMPORTANCE

Presented By
MAHADEO KUMAR
GUEST TEACHER
W.T.C, P.U

B.Ed. 2nd YEAR

WOMEN'S TRAINING COLLEGE
PATNA UNIVERSITY, PATNA

शिक्षण-अधिगम सहायक सामग्री: अर्थ एवं परिभाषा

अर्थ - ***अध्यापन के दौरान पाठ्य सामग्री को समझाते समय शिक्षक जिन-जिन सामग्रियां का प्रयोग करता है वह सहायक सामग्री कहलाती है।*** किन्तु आधुनिक शिक्षा प्रणाली में सहायक सामग्री के संबंध में कई नवाचार हुए है जिनकी सहायता से अध्ययन को रोचक व प्रभावपूर्ण बनाया जा सकता है। इन सामग्रियां द्वारा सीखा ज्ञान न केवल छात्रों में उत्साह जागृत करता है वरन् सीखे हुए ज्ञान को लंबे समय तक अपने स्मृति पटल में संजोए रख सकता है। दूसरी और शिक्षक भी अपने अध्यापन के प्रति उत्साहित रहता है। परिणाम स्वरूप कक्षा का वातावरण हमेशा सकारात्मक बना रहता है। शिक्षण-सहायक सामग्री शिक्षण के उद्देश्यों की पूर्ति के साथ-साथ उसे प्रभावी और सफल बनाने के लिए जिन सामग्रियां का प्रयोग किया जाता है, उसे शिक्षण-अधिगम सहायक सामग्री कहते हैं। इसके द्वारा विषय को समझने में आसानी होती है।

परिभाषा –

1. **एलविन स्ट्राँग** के अनुसार: ***"सहायक सामग्री के अंतर्गत उन सभी सामग्री को सम्मिलित किया जाता है। जिसकी सहायता से छात्रों की पाठ में रुचि बनी रहती है तथा वे उसे सरलतापूर्वक समझते हुए अधिगम के उद्देश्य को प्राप्त कर लेते हैं।"***।
2. **डेण्ड** के अनुसार**:** ***"सहायक सामग्री वह सामग्री है, जो कक्षा में या अन्य शिक्षण परिस्थितियों में लिखित या बोली गई पाठ्य सामग्री को समझने में सहायता प्रदान करती है।"***

शिक्षण सहायक सामग्री के प्रकार

- **दृश्य-श्रव्य सामग्री** - इन सामग्रियां से बच्चे अधिकतम इन्द्रियों उपयोग होता है और बेहतर ज्ञान हासिल करने के लिए सभी इन्द्रियों का उपयोग आवश्यक है। ये सामग्रियां बहु-आयामी बुद्धि आधारित कक्षा के लिए अत्यंत उपयोगी होती है। इनके उपयोग से किसी भी विषय-वस्तु को रोचक, सरल एवं बोध-गम्य बनाया जा सकता है। इस से बच्चों का मनोरंजन भी होता है और ज्ञान स्थाई बन जाता है। उदाहरण - ***टेलीविजन, फिल्म, प्रोजेक्टर आदि।***

- **क्रिया-सहायक सामग्री** - इस के द्वारा प्राप्त ज्ञान वास्तविक होता है। इनके द्वारा नई-नई चीजों का अध्ययन किया जाता है। इससे बालकों को व्यक्तित्व अनुभव की प्राप्ति होती है। उदाहरण - ***भ्रमण, किसी ऐतिहासिक स्थान का भ्रमण, किसी संग्रहालय का भ्रमण, किसी उद्यान का भ्रमण***

- **दृश्य सामग्री** - इस सामग्री द्वारा आँखों से देखकर वस्तु के वास्तविक गुणों की पहचान की जाती है। उदाहरण - ***चित्र, श्यामपट्ट/बोर्ड, टिकट/समय सारणी (टाइम-टेबल), स्लाइड/फिल्म, मॉडल/प्रदर्शन, नक्शा/मैप, पत्र-पत्रिकाएँ/समाचार-पत्र, चार्ट, ग्राफ***

- **श्रव्य सामग्री** - इन सामग्रियां के द्वारा कानों से सूचना ग्रहण की जाती है। इस से बच्चा कही भी बैठा-बैठा ज्ञान प्राप्त कर सकता है। इस सामग्री के उदाहरण है - ***रेडियो, ग्रामोफ़ोन, टेप-रिकॉर्डर आदि।***

सहायक सामग्री प्रयोग के उद्देश्य

- ✓ छात्रों में पाठ तथा विषय-वस्तु के प्रति रुचि उत्पन्न करना जिससे वे सक्रियता से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में भाग लें।
- ✓ पाठ में शामिल तथ्यात्मक सूचनाओं को रोचक व सरल तरीके से प्रस्तुत करना।
- ✓ विशेष आवश्यकता वाले बालकों को यथा- मंद बुद्धि बालक, तीव्र बुद्धि बालक, सृजनात्मक बालक आदि की योग्यता व आवश्यकतानुसार शिक्षा देना।
- ✓ कठिन विषय को सरल व सहज रूप में प्रस्तुत करना।
- ✓ छात्रों का ध्यान पाठ की ओर आकर्षित करना।
- ✓ अमूर्त पदार्थों को मूर्त रूप देना।

उत्तम शिक्षण अधिगम सामग्री

- ✓ आसानी से उपलब्ध हो या निर्मित की जा सकती हो।
- ✓ शिक्षण अधिगम के बीच पुल का काम करती हो।
- ✓ विषयवस्तु को अच्छी तरह समझाती हो।
- ✓ कक्षा के सभी स्तर के छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित करने वाली हो।
- ✓ कठिन, अमूर्त विषयों का सजीव रेखांकन करने में सहायक हो।
- ✓ शिक्षाविदों ने खेल, गीत, नाटक को सर्वोतम सहायक सामग्री के रूप में निरूपित किया है।
- ✓ प्रशिक्षु इसी तरह अन्य बिन्दुओं को शामिल करें ।

शिक्षण सहायक सामग्री का महत्व

1. ये विद्यार्थियों को पुनर्बलन प्रदान करती हैं।
2. ये विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देती हैं।
3. ये कक्षा में अनुशासन बनाये रखती हैं क्योंकि ये बच्चों में रुचि पैदा करती है।
4. ये पठन-पाठन में नवीनता लाती है।
5. इनके प्रयोग से समय और शक्ति की बचत होती है।
6. ये रटने की प्रवृत्ति को कम करती है।
7. शिक्षण सहायक सामग्रियां से अभिप्रेरणा मिलती है।
8. ये कठिन से कठिन विषय-वस्तु को सरल, स्पष्ट, रुचिकर एवं सार्थक बना देती है।
9. सीखने में अपेक्षाकृत कम समय लगता है। प्राप्त ज्ञान स्थायी होता है।
10. शिक्षण प्रक्रिया में क्रियाशीलता बनी रहती है।
11. आत्म विश्वास में वृद्धि होती है।
12. बच्चों में एक दूसरे का सहयोग करने की भावना बढ़ती है।
13. कक्षा नियोजन की प्रक्रिया सरल हो जाती है।
14. बच्चों को एक-दूसरे से विचार-विमर्श का अवसर मिलता है।
15. कक्षा में नियमित उपस्थिति बढ़ जाती है।
16. शिक्षक शिक्षण के अन्य पहलुओं पर ध्यान दे पाता है।
17. नया प्रवेश पाये छात्र कक्षा में जल्दी घुल-मिल जाते हैं।